Vol 6 Issue 11 Dec 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में सैमेस्टर प्रणाली के प्रति अभिरूचि–करनाल जिले का एक अध्ययन

डॉ. राहुल
पी.एच.डी., समाजशास्त्र

भूमिका

शिक्षा जीवन के विकास की प्रक्रिया है । व्यक्ति और समाज के जीवन में जो कुछ विकास हुआ है वह शिक्षा के द्वारा ही हुआ है। शिक्षा ही एकमात्र ऐसा साधन है जो मनुष्य तथा सम्पूर्ण दुनियां का समन्वय स्थापित करता है । मानव जीवन से मृत्यु पर्यन्त किसी न किसी रूप में हम शिक्षा ग्रहण करते हैं । समय, स्थान और समाज की बदलती आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा परिवर्तन को अपनाकर समाज पुनर्निर्माण करती है और इसके साथ ही शिक्षा व्यक्ति की आन्तरिक शक्तियों के विकास में भी सहायक होती है।

माध्यमिक शिक्षा

भारत की शिक्षा व्यवस्था में परिस्थितियाँ विशेष के कारण माध्यमिक शिक्षा को बड़ा महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है इसलिए शिक्षा सुधार प्रयत्नों में माध्यमिक शिक्षा को विशेष स्थान दिया गया है । विकासशील भारत की प्रजातन्त्र व्यवस्था में माध्यमिक शिक्षा का बहुत अधिक महत्व है । माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था एक शिक्षा का ऐसा द्वार है जो एक ओर तो उच्च शिक्षा में प्रवेश के लिए और दूसरी ओर रोजगार एवं जीवन यापन के लिए रास्ता खोलता है देश का प्रजातन्त्रात्मक ढंग से विकास करने के लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न क्षेत्रों में मध्यवर्गीय कुशल एवं प्रशिक्षित व्यक्ति प्राप्त हो । इस प्रकार के व्यक्ति सामज के एक वर्ग से नहीं बल्कि प्रत्येक वर्ग से आने चाहिए । ऐसे व्यक्तियों को प्रशिक्षण देने का मुख्यरूप से उत्तरदायित्व माध्यमिक शिक्षा का

है इसलिए आवश्यक है कि माध्यमिक शिक्षा हमारी शिक्षा की एक मजबूत कड़ी है । जो इस उत्तरदायित्व को वहन करने में पूर्णतया समर्थ है । अंग्रेजी काल में माध्यमिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य अंग्रेजी शिक्षा प्रदान करना था। अतः शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी था । सन् 1925 के पश्चात् कुछ प्रान्तों में प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा माध्यम स्वीकार कर लिया गया परन्तु उनके स्कूलों में अंग्रेजी को ही शिक्षा का माध्यम निरन्तर रखा गया । माध्यमिक शिक्षा का स्वरूप साहित्यिक एवं सैद्धान्तिक था तथा पाठ्यक्रम में अंग्रेजी एक भारतीय भाषा, गणित, इतिहास, भूगोल, शास्त्रीय भाषा, भौतिक, रसायन, शास्त्र विषय सम्मिलित थे। हंटर कमीशन (1882) ने माध्यमिक स्तर पर दो प्रकार के कोर्स चलाए । एक तो छात्रों को व्यवसायिक एवं तकनीकी शिक्षा तथा दूसरा छात्रों को विश्वविद्यालयी शिक्षा में प्रवेश प्रदन करना ।

सैमेस्टर प्रणाली की अवधारणा

सैमेस्टर प्रणाली शिक्षा के अनुसरण में एक विशिष्ट प्रस्ताव के रूप में कल्पित हुई जिसमें एक निश्चित कालावधि में विद्यार्थियों को विभिन्न पाठ्यक्रमों में से अपनी इच्छानुसार पाठ्यक्रम चुनने की स्वतन्त्रता होती है । सैमेस्टर के शब्द कोषीय अर्थ के रूप में सैमेस्टर का अर्थ अर्धवार्षिक है तथा शिक्षा में इसकी अवधारणा षट्मासिक पाठ्यक्रमों के रूप में है । हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के संदर्भ में सत्र प्रणाली का पाठ्यक्रम आधे–आधे वर्ष का है, जिसके लिए अलग से परीक्षा आयोजित की जाती है, तथा प्रथम सैमेस्टर की परीक्षा का भारांश 40 प्रतिशत तथा दूसरे सैमेस्टर की परीक्षा का भारांश 60 प्रतिशत रखा गया है ।

सत्रीय प्रणाली की विशेषताएं सामान्य उद्देश्य

1.हरियाणा राज्य में विद्यालयी शिक्षा के समग्र का गुणवत्ता विकास।
2.विद्यालयों में शिक्षण प्रक्रिया को ओर अधिक शिक्षार्थी अनुकूल बनाना ।
3.शिक्षा को व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के अनुकूल बनाना ।
4.राज्य में प्रचलित शिक्षा व्यवस्था की साख को ऊँचा उठाना ।
5.अध्यापक वर्ग को ओर अधिक जिम्मेवार एवम् उतरदायी बनाना।
6.हरियाणा के बच्चों को अच्छी शिक्षा प्रदान करना ताकि वे राष्ट्रीय एवम् अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं के योग्य प्रतियोगी बन सके ।

विशेष उद्देश्य

1.विद्यालयों में शिक्षण एवम् अधिगम सर्वोतम हो ।
2.विद्यार्थी पर सार्वजनिक परीक्षा के पाठ्यक्रम के बोझ को कम करना ।
3.मूल्यांकन को सतत् एवम् व्यापक बनाना ।
4.परीक्षाओं को तनावमुक्त करना ।
5.परीक्षाओं को हटाए बिना उनके डर को समाप्त करना ।
6.प्रतिस्पर्धात्मक जगत् के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना ।
7.मेधावी छात्रों के लिए ज्ञान को और समृद्ध करने की योजनाओं को सुदृढ़ करना ।
8.कमजोर छात्रों के लिए उपचारी योजनाओं का मार्गप्रशस्त करना।
9.फेल (अनुतीर्ण) शब्द से मुक्ति पाते हुए सापेक्ष श्रेणी करना (रिलेटिव ग्रेडिंग) प्रणाली को विद्यार्थियों की योग्यता, प्रतिभा एवम् प्रयास को मान्यता देते हुए उचित एवम् न्याय संगत ढंग से लागू करना ।

सैमेस्टर प्रणाली का कैलेण्डर

प्रथम स्तर : अप्रैल 1 से 30 सितम्बर तक
ग्रीष्मावकाश : 1 जून से 30 जून तक
द्वितीय स्तर :1 अक्तूबर से 31 मार्च तक

सैमेस्टर प्रणाली के लाभ

सैमेस्टर प्रणाली के भिन्न–भिन्न वर्गों को होने वाले सम्भावित लाभ इस प्रकार है –

क. विद्यार्थी

- एक बार में विद्यार्थी को थोड़ा पाठ्यक्रम तैयार करना पड़ता है।

• परीक्षा का तनाव कम होना तथा भय कम होना ।
• एक विद्यार्थी को दो अतिरिक्त अवसर आने वाले सत्र में प्राप्त होते है, जिसमें वह योग्यता अर्जित होने के लिए चाहिए, अर्जित कर सकता है ।
• यदि कोई विद्यार्थी किसी पेपर में चारों सैमेस्टर में योग्यता प्राप्त करने के स्तर तक आ जाता है तो वह उस विषय में सफल माना जाता है । यदि कोई विद्यार्थी अपने ग्रेडस में सुधार करना चाहता है तो ऐसा करने के लिए वह सैमेस्टर कोर्स में एक ओर अवसर ले सकता है । बच्चे भविष्य की चयनीय परीक्षाओं के लिए अच्छे तैयार हो सकते हैं ।

ख. अभिभावक / माता–पिता

• माता–पिता अपनी महत्वाकाक्षाएं अपने बच्चों के माध्यम पर्याप्त मात्रा में पूर्ण कर सकेगे।
• विद्यार्थी वर्षभर अध्ययनरत रहेगे तथा उनकी योग्यताएं उत्तरोतर बढ़ेगी ।
• प्रतियोगी परीक्षाओं में भी प्रवेश / चयन की दृष्टि से स्वयं को जीवन की अनेक अप्रत्याशित स्थितियों से निपटने के लिए विद्यार्थी अच्छा तैयार कर पाएंगे ।

ग. विद्यालयों के मुखिया

• विद्यालयों के मुखिया परिवर्तन की दिशा में मुख्य उत्प्रेरक बन सकेंगे ।
• वे सम्पूर्ण अभिक्रिया के प्रबोधन होने के अवसर प्राप्त करेंगे।
• विद्यालय के मुखिया स्वयं को सम्पूर्ण शिक्षा के परिवर्तन के संवाहक के रूप में देख सकेंगे ।
• विद्यालय की प्रतिष्ठा में वृद्धि के साथ–साथ मुखिया का सम्मान भी बढ़ेगा ।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

प्रस्तुत शोध के लिए ने जिन–जिन संबंधित साहित्यों, लेखों, पत्र–पत्रिकाओं एवम् उद्घोषणाओं का अध्ययन किया है, उनका विवरण इस प्रकार है –

राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1986 ने परीक्षा प्रणाली में सुधार के लिए सैमेस्टर प्रणाली का सुझाव दिया है । इस नीति के अनुसार प्रणाली लागू करने का मुख्य उद्देश्य छात्रों पर बढ़ते पाठ्यक्रम व परीक्षा के दबाव व तनाव को कम करना है ।
वें (1988) ने भी सत्रीय प्रणाली को हर प्रकार से अध्यापकों विद्यार्थियों के लिए उचित बताते हुए इसे लागू करने के पक्ष में सुझाव दिया । उन्होंने अपने लेख में बताया कि –
1. सत्रीय प्रणाली छात्रों के लिए नियमित अध्ययन में सहायक हो ।
2. सत्रीय प्रणाली से पाठ्यक्रम का दबाव कम हो सकेगा ।
3. सत्रीय प्रणाली छात्रों को अधिकतम व अच्छे अंक लेने में सहायक होगी ।
4. अध्यापकों को पढ़ाए गए विषयों में अच्छे अंक आने से उनकी साख बढ़ेगी ।

मल्होत्रा एम.एन. और तुलसी पी.के. (1990) ने विद्यार्थियों और आवश्यक प्रति पुष्टि प्रदान की ।

भट्टाचार्य (1999), कलकता के विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों अध्यापकों तथा मुख्याध्यापकों के सैमेस्टर प्रणाली के बारे में विचारों का सर्वेक्षण किया कि क्या स्कूलों में सैमेस्टर प्रणाली होनी चाहिए? जिसमें 66.6 प्रतिशत ही सहमति हमें लागू करने के प्रति थी उनके अनुसार –
1. सैमेस्टर प्रणाली विद्यार्थियों को व्यस्त रखती है ।
2. सैमेस्टर प्रणाली से छात्र पाठ्यक्रम का गहनता से अध्ययन करेंगे।
3. प्रथम सैमेस्टर परिणाम के दृष्टिगत उन्हें अगले सैमेस्टर में स्वयं को और अधिक योग्य करने का मार्गदर्शन प्राप्त होगा ।
4. अध्यापकों, मुख्याध्यापकों की भूमिका सशक्त होगी ।
5. अध्यापकों की व्यस्तता बढ़ेगी ।

नन्दी (2000) ने सैमेस्टर प्रणाली के विस्तृत अध्ययन के पश्चात् अपनी रिपोर्ट में बताया कि आज के प्रतिस्पर्धा युग में सही मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहते हैं और सत्रीय प्रणाली इसको पूरा करने में उन्हें सही राह दिखाने में मद्दगार साबित होगी।

तुनक (2003) ने सैमेस्टर प्रणाली को नया प्रारूप बताया इससे विद्यार्थी परीक्षा के साथ–साथ दूसरी गतिविधियों में भी भाग ले सकते हैं।

राजलक्ष्मी (शिक्षामन्त्री, आन्ध्रप्रदेश) ने 10 सितम्बर 2004 को विभिन्न शिक्षाविदों को सम्बोधित करते हुए सत्रीय प्रणाली की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहा स्कूल विद्यार्थियों पर दबाव नहीं होना चाहिए । दबाव को कम करने में सत्रीय प्रणाली बहुत अधिक लाभप्रद है ।
5वां, जंक्शन (2008) ने सैमेस्टर प्रणाली बनाम वार्षिक प्रणाली के तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि वार्षिक प्रणाली की बजाय सैमेस्टर प्रणाली विद्यार्थियों को अधिक व्यस्त रखती है जो कि विद्यार्थी जीवन के लिए लाभप्रद है । क्योंकि इसमें षटमासिक परीक्षा होने से विद्यार्थियों का पढ़ाई के प्रति लगातार रूझान बना रहता है ।

दिलशाह (2010) के अनुसार सैमेस्टर प्रणाली में अध्यापकों व विद्यार्थियों का गुणात्मक व व्यापक मूल्यांकन किया जा सकता है जो कि शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में आवश्यक सुधार हेतु सहायक है ।

गुजरात ऐजूकेशन बोर्ड (2011) ने यह निर्णय लिया कि 9–12 तक की सभी कक्षाओं में सैमेस्टर प्रणाली लागू की जाएगी क्योंकि यह पूर्णतया लाभकारी है ।

इसमें अध्यापकों की भूमिका सशक्त होगी, विद्यार्थी सारा वर्ष अच्छी प्रकार से अध्ययन कर सकेंगे और वह स्वयं को अधिक विश्वस्त महसूस करेंगे ।

हाई स्कूल प्रोग्राम गाइड (2013) के अनुसार सैमेस्टर व उससे सम्बन्धित विषयों को स्कूलों में इस ढंग से लागे किया जाए कि विद्यार्थियों में विभिन्न कौशलों के साथ–साथ उनके सर्वांगीण विकास हो सके ।

शोध योजना और प्रक्रिया विधि

वर्तमान शोध समस्या का मुख्य उद्देश्य करनाल जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में सैमेस्टर प्रणाली के प्रति अभिरूचि का अध्ययन

करना है प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया और 40 विद्यार्थियों को लिया गया है। स्वयं निर्मित साक्षात्कार अनुसूचि का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय तकनीक का उपयोग

इस शोध कार्य में आवृति और प्रतिशत में उत्तरदाताओं के उत्तर दिए हैं और प्रत्येक कथन के उत्तर एस.पी.एस.एस. में गणित किए गए है जो कि छात्रों में सैमेस्टर प्रणाली के प्रति अभिरूचि से सम्बन्धित विचारों को व्यक्त करते हैं ।

उद्देश्य

1.सैमेस्टर प्रणाली के प्रति विद्यार्थियों की अभिरूचि की जानकारी प्राप्त करना ।
2.ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों की सैमेस्टर प्रणाली के प्रति दृष्टिकोण का पता लगाना ।
3.शिक्षण तथा अधिगम पर पड़ने वाले प्रभावों को ज्ञात करना ।
4.सैमेस्टर प्रणाली के विद्यार्थियों के लिए दशाए गए लाभों की वास्तविक स्थिति का पता लगाना ।

शोध की सीमाएं

1.प्रस्तुत शोध में करनाल के उच्च माध्यमिक विद्यालय के माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियो को लिया गया है ।
2.प्रस्तुत शोध में 40 विद्यार्थियों को लिया गया है ।

निष्कर्ष

इस शोधकार्य में 55.0प्रतिशत छात्राएं हैं । 57.5प्रतिशत छात्र ग्याहरवी कक्षा के है 60.0 प्रतिशत छात्र 16 से 20 आयु वर्ग के है । 62.5 प्रतिशत छात्र आर्ट वर्ग के व 25.0 प्रतिशत छात्र कॉमर्स वर्ग के है । 67.5 प्रतिशत छात्रों के पिता 10वीं है 20.0 प्रतिशत छात्रों के पिता 12वीं है । 32.5 प्रतिशत छात्रों के पिता का व्यवसाय सरकारी नौकरी है 32.5 प्रतिशत छात्रों के पिता का व्यवसाय कृषि है । 35 प्रतिशत छात्रों की माता 10वीं है 32.5 प्रतिशत छात्रों की माता 12वी है 72.5 प्रतिशत छात्रों का माध्यम हिन्दी है । 62.5 प्रतिशत छात्र एकल परिवार से हैं 52.5 प्रतिशत छात्र प्राइवेट स्कूल से है 72.5 प्रतिश्ता छात्रों के पास घर पर पढ़ने के लिए जगह है 77.5 प्रतिशत छात्रों के पास स्वयं के लिए जगह है 92.5 प्रतिशत छात्रों के अनुसार स्कूल में खेल कूद व अन्य गतिविधियां आयोजित होती है 67.5 प्रतिशत छात्रों के अनुसार सैमेस्टर प्रणाली से उनकी पढ़ाई पर दबाव कम हो गया है 52.5 प्रतिशत छात्रों के अनुसार उनका पाठ्यक्रम पूरे सैमेस्टर में पूरा नहीं होता । 67.5 प्रतिशत छात्रों के अनुसार उनको परीक्षा की तैयारी हेतु पर्याप्त समय नहीं मिलता है । 95.0 प्रतिशत छात्रों के अनुसार सैमेस्टर प्रणाली पाठ्यक्रम का गहनता से करने के लिए एक उचित विधि है। 52.5 प्रतिशत छात्रों के अनुसार सैमेस्टर प्रणाली से उनके ज्ञान में वृद्धि हुई है 60.0 प्रतिशत छात्रों के अनुसार सैमेस्टर प्रणाली वार्षिक परीक्षा से बेहतर नहीं है । 80.0 प्रतिशत छात्रों के अनुसार पाठ्यक्रम में विभाजन से उनको लाभ हुआ है । 55.0 प्रतिशत छात्रों के अनुसार सैमेस्टर प्रणाली बच्चों के मानसिक विकास के पर्याप्त भविष्य में सुचारू रूप से नहीं रखनी चाहिए । 85.0 प्रतिशत छात्रों के अनुसार सैमेस्टर प्रणाली में होने वाली परीक्षाओं मं अच्छे अंक प्राप्त कर रहे हैं 67.8 प्रतिशत छात्रों के अनुसार उन पर ट्यूशन का बढ़ता दबाव कम नहीं हुआ है । 92.5 प्रतिशत छात्रों के अनुसार उनका अध्यापक उनकी समस्याओं के प्रति समाधान के लिए समय देता है । 80.0 प्रतिशत छात्रों के अनुसार उन पर गृह कार्य का दबाव बढ़ रहा है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.सक्सैना, एन.आर.एस. (2001). शिक्षा के दार्शनिक एवम् सामाजशास्त्रीय सिद्धान्त, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
2.शर्मा, आर.ए. (1998). शिक्षा अनुसंधान आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
3.गुप्ता, एस.पी. (1987). सांख्यिकी के सिद्धान्त सुल्तान चंद एवम् पुत्र, नई दिल्ली ।
4.सुखिया, एवं मल्होत्रा (1990). शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, गोविन्द पॉकेट बुक्स, आगरा ।
5.वशिष्ठ, के.के., एवं शर्मा डी.एल. (1998). आधुनिक भारतीय शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ ।
6.शुक्ला, पी.डी. (1994). भारत में नई शिक्षा नीति, 1986 ।
7.हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी (2012), पट–मासिक सत्र योजना।
8.शर्मा, आर.ए. (2010). तुलनात्मक शिक्षा, मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ ।
9.वास्तव, डी.एन. (2008). शैक्षिक अनुसंधान की कार्य, प्रणाली, मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ ।
10.कपिल, एच.के. (2011). सांख्यिकी के मूल तत्व, अग्रवाल प्रकाशन, आगरा ।
11.गुप्ता, एस.पी., एवं अल्का (2010). सांख्यिकी की विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन प्रकाशक और वितरक, इलाहाबाद ।
12.गुप्ता, प्रो. एस.पी. (2011). अनुसंधान संदर्शिका (सम्प्रत्य, कार्यविधि एवं प्रविधि, शारद पुस्तक भवन, इलाहाबाद ।
13.कोल, आर.ए. (2010). शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला (हि.प्र.) ।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org